Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन

गोबिंद[1], अरमान अली[2] और पिंकी[3]

[1,2] शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय- हिसार (हरियाणा)

arman9718839522@gmail.com

[3] स्नातकोत्तर विद्यार्थी, मनोविज्ञान विभाग, चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय- भिवानी (हरियाणा)

Paper Received On: 21 JUNE 2021
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021
Published On: 1 JULY 2021

Abstract

यह सत्य है कि संस्कृति निरंतर बदलती है, उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। कोई भी समाज सदा स्थिर नहीं रह पाता है। संस्कृति के संपर्क में आने से समाज में नई प्रवृत्तियाँ भी प्रवेश करती है। संस्कृतियों के बदलाव के कारण ही भौगोलिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, औद्योगिकीकरण का विकास, आधुनिकीकरण के प्रत्यक्ष प्रभाव का होना भी स्वाभाविक है। आधुनिक समय में परिवर्तित होती शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ प्रतिस्पर्धा वाले इस दौर में विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में परिवर्तन देखने मिल रहें है, जिसके कारणवश विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने के प्रति अभिवृत्ति में निरंतर बदलाव दृष्टिगत हो रहें हैं। विद्यार्थी शिक्षा को नैतिक मूल्यों से दूर करके व्यवसाय से संबंधित समझ रहे है। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को सकारात्मक दिशा में बढ़ाकर मूल्य आधारित समाज का निर्माण किया जा सके। इसलिए वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न शोध-पत्रों, पुस्तकों, सहायक सामग्रियों की सहायता से इस शोध-पत्र लेख को पूर्ण किया गया है।

शब्द कुंजी *- शैक्षिक अभिवृत्ति, विद्यार्थियों, शिक्षक, नैतिक मूल्य, आदर्श विद्यार्थी, अकादमिक उपलब्धि, परिवेश ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

अभिवृत्ति के स्वरूप को परिभाषित करने के संदर्भ में 'शिक्षा मनोविज्ञान' विषय में निरंतर वाद-विवाद रहा है, क्योंकि इसका विशेष कारण यह है कि अधिकांश परिभाषाओं को नैतिकता के दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है। जिसके कारण अभिवृत्ति को परिभाषित करना जटिल कार्य हो जाता है। कोई भी विद्वान अभिवृत्ति की स्पष्ट परिभाषा नहीं दे पाया है। अनेक विद्वानों ने अपने अनुसार अभिवृत्ति की परिभाषाएं बतायी है। विद्वान फ्रीमेन (1966) के अनुसार अभिवृत्ति किसी परिस्थिति विशेष, व्यक्ति विशेष या मानसिक प्रक्रियाओं के प्रति अधिगम व्यवहारों में निहित प्रतिक्रिया कहलाती है, जो कि किसी व्यक्ति विशेष का एक निश्चित कार्य के प्रति क्रियात्मक व्यवहार होता है। विद्वान स्किनर (1974) के अनुसार अभिवृत्ति एक ऐसी विकासात्मक स्थिति होती है, जो कि व्यक्तियों की मानसिक एवं जैविक प्रतिकियाओं के द्वारा किसी व्यक्ति विशेष के किसी परिस्थिति विशेष में उसके द्वारा किये गये प्रतिक्रियाओं का एक प्रेरणात्मक प्रभाव होता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर अभिवृत्ति के संदर्भ में कुछ मुख्य बातें निकल कर आती है, जिससे अभिवृत्ति को सरलतापूर्वक बताने का प्रयास किया गया है।

अभिवृत्ति मनोवैज्ञानिक संप्रत्ययों का एक समुच्चय होता है जिसमें संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहार संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक घटक समाहित होते है। अभिवृत्ति व्यक्तियों के दैनिक जीवन के अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप निर्मित होती है। अभिवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है।

शैक्षिक अभिवृत्ति

शिक्षा मनुष्यों की श्रेष्ठ व्यक्तित्व और उसके संस्कारों की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ घर पर रहते है, परंतु हर परिवार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होंगे जो सभी गुणों से समृद्ध हो सकते है और कुछ परिवारों में नहीं भी होते है। इसलिए परिवारों के संस्कारों की अपनी भी सीमाएं होती है। एक बच्चे का पहला गुरु उसके माँ-बाप ही होते है, परंतु माता-पिता के बाद बच्चों की सार्वजनिक ज़िम्मेदारी शिक्षकों की होती है। अभिवृत्ति एक विश्वास होता है जो समाज के हर मनुष्य का अपने परिवेश और अन्य व्यक्तियों के प्रति होता है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिवृत्ति विकास किस तरह से होता है। वह किस प्रकार से अपने व्यवहारों को प्रदर्शित करते है या उनके व्यवहारों कैसे बदला जा सकता है, शिक्षा को अभिवृत्ति से संबंधित करते हैं और शैक्षिक अभिवृत्ति में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विकास होता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया और अनुभवों के द्वारा ही विद्यार्थियों में सीखने की अलग-अलग योग्यता विकसित होती है। शिक्षा से संबंधित व्यक्तियों एवं शिक्षकों को अपनी कार्य करने की योग्यता एवं क्षमताओं से प्रभावित करते है। क्योंकि अधिगम प्रकिया के द्वारा ही विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास निरंतर होता रहता है, क्योंकि किसी भी देश का उज्जवल भविष्य वहाँ के विद्यार्थी होते है। शिक्षा से विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है। जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ भी प्रभावित होती है।

विद्यार्थियों के भिन्न-भिन्न तरह का व्यवहार उनके शिक्षकों के व्यवहारों पर आधारित होता है। विद्यार्थियों के लिए यह जानना बहुत जरूरी होता है कि शिक्षक उनके द्वारा किए गए व्यवहारों की तुलना में किस तरह का व्यवहार करते है। प्रतिभाशाली शिक्षकों की संगति के साथ में रहने के कारण उसका लाभ विद्यालयों या स्कूलों, विद्यार्थियों को ही मिलता है। इसलिए शिक्षक का चरित्र, व्यक्तित्व और आचरण अनुकरणीय होना चाहिए। शिक्षकों में त्याग, सेवा, करुणा, प्रेम, विश्वास, राष्ट्रीयता, नैतिकता के त्याग मूल्यों के शिक्षकों का आदर्श व्यवहार और प्रभावित करने वाला व्यक्तित्व होना अति आवश्यक है। विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्तियों का विकास जो है वह विद्यालयों और शिक्षकों की आपसी सहभागिता के माध्यम से ही किया जा सकता है।

शिक्षकों को शिक्षण कार्य शैली निरंतर उनकी पूर्व-शिक्षा अनुभवों के आधार पर और सामाजिक मानकों एवं मूल्यों की उपयोगिता तथा ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को संप्रेषित करते हुयें, समाज के सर्वांगीण विकास को महत्त्वपूर्ण समझते हुए अपने समस्त शैक्षिक कार्यों को पूर्ण करना चाहिए। इस तरह से शिक्षकों को सामाजिक एवं शैक्षिक

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विकास की वृद्धि के लिए अपना अमूल्य योगदान हमेशा प्रदान करते रहना चाहिए, इस तरह वह सच्चे अर्थों में एक आदर्श शिक्षक बन सकते है और वह आदर्श विद्यार्थी राष्ट्र को प्रदान कर सकेंगे।

विद्यार्थी अभिवृत्ति

अभिवृत्ति व्यक्तियों के जीवन के समस्त पहलुओं को परिवर्तित करती है, जिसमें शिक्षा भी शामिल होती है। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति उनके सीखने की क्षमताओं और इच्छाओं का निर्धारण करती है। विद्यार्थियों में सीखने के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति को बदलना एक ऐसी प्रक्रिया होती है जिसके अंतर्गत अभिवृत्ति को निर्धारण करने वाले कारकों को निर्धारित करना और उनमे बदलाव लाने के लिए अन्य जानकारियों का उपयोग करना चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों के सीखने वाली प्रक्रियाओं के दौरान विद्यार्थियों की नकारात्मक अभिवृत्तियों को उजागर करते हुए विद्यार्थियों को चुनौतियों की समस्त जानकारी के बारे में बताना चाहिए। जिसका उपयोग विद्यार्थियों के सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित करने में किया जा सके। सकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षण प्रक्रिया के लिए अति आवश्यक मानी जाती है।

विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले घटक

मानव व्यवहार में मनुष्य की अभिवृत्ति विभिन्न पक्षों से प्रभावित होती है। अभिवृत्तियाँ व्यक्ति के अनुभवों के आधार पर विकसित होती है अभिवृत्ति को प्रभावित करने में व्यक्तियों के अनुभवों का विशेष योगदान होता है। व्यक्तियों के अनुभवों के आधार पर ही अभिवृत्ति का निर्माण होता है, जिसकी वजह से व्यक्तियों की अभिवृत्ति प्रभावित होती है। पिछले कुछ विगत दशकों में हुए अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने में परिवार, विद्यालय एवं महाविद्यालय के परिवेश आदि की विशेष भूमिका होती है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहारों पर पड़ता है, जिससे विद्यार्थियों की अभिवृत्तियाँ भी निरंतर प्रभावित होती रहती है।

परिवार का परिवेश

शैशवावस्था काल में माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यगण भी बच्चों के अभिवृत्ति निर्माण में अहम भूमिका निभाते है। बच्चों के अभिवृत्ति निर्माण में परिवार के परिवेश या वातावरण की महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि होती है। अगर बच्चों को उनके परिवारों के द्वारा सकारात्मक वातावरण नहीं मिलता है तो उनकी अभिवृत्ति निर्माण में रुकावटें या बाधाएं उत्पन्न होती है।

विद्यालय एवं महाविद्यालय का परिवेश

विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों को परिवर्तित करने में विद्यालय एवं महाविद्यालय का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय और महाविद्यालय में विद्यार्थी अध्ययन करने के लिए आते हैं, व विभिन्न संप्रदायों के अलग-अलग जातियों या वर्गो से संबंध रखते है। वह आपस में संवाद करने लगते है और आपस में घुल-मिल जाते है। वह एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र भी बन जाते है। निकटताओं के कारण उनकों एक-दूसरे को जानने का मौका भी मिलता है। जिसके अनुरूप विद्यार्थी नए-नए अनुभवों को सीखने लगते है और नए अनुभवों के कारण की उनकी आधारहीन विश्वासों

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वाली अभिवृत्तियो में परिवर्तन होने लगता है। स्टीम्बर 1961 ने अपने अध्ययन में बताया है कि शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ-साथ विद्यार्थियों की पूर्वधारणा मिटने या विस्मरण होने लगती है।

शोध विषय की आवश्यकता एवं महत्त्व

इस आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी एवं सूचना क्रांति और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से नवाचार आधारित विकसित पद्धतियों के द्वारा शिक्षा प्रणाली में भी निरंतर परिवर्तन होता जा रहा हैं, समाज के बदलते स्वरूप के साथ-साथ उसकी संस्कृति भी निरंतर परिवर्तित होती जा रही है। समाज के बदलते स्वरूप के साथ-साथ मूल्यों एवं मान्यताओं में बड़ा बदलाव हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं रहा है, जिसके कारण आज मानवीय समाज भी अनेक मनो-सामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं से घिरा हुआ है। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध-प्रपत्र को पूर्ण किया है।

साहित्य पुनरावलोकन

ओझा, एस. (2013). ANVESHANAM - शिक्षा का एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ने छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी जनपद के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबन्धित एक निजी विद्यालय के अंतर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में 100 छात्रों एवं 100 छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जिसमे स्वयं निर्मित व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग एवं एस.पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित मूल्य अध्ययन मापनी का प्रयोग किया गया और आकड़ों का संग्रहण तथा आकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि छात्रों ओर छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर पाया गया है। जबकि उनके के मूल्यों में कोई भी सार्थक अंतर नही है।

दास, के. एस. एवं हलदर, के. यू. और मिश्रा, बी. (2014). एप्लाइड रिसर्च आफ इंटरनेशनल जर्नल ने माध्यमिक स्तर के अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। वर्तमान समय में शिक्षा को अलग-अलग भागों में वर्गीकृत किया गया है, जिसके अंतर्गत माध्यमिक स्तर के अल्पसंख्यक विद्यार्थी भी आते है। अल्पसंख्यक बच्चों को ध्यान में रखते हुए केंद्र एवं राज्य सरकार अपने-अपने स्तर पर सहयोग करती है। उसमें से ही अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा मुहैया करवाना, सम्मिलित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में पश्चिम बंगाल राज्य के मालदा जिले के 09 विद्यालयों का शामिल किया है। प्रस्तुत अध्ययन अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों की शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति पर आधारित है। अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में कक्षा दसवीं के माध्यमिक स्तर वाले 257 अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को (127 छात्रों और 130 छात्राओं) यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित करने के साथ ही आंकड़ों का संग्रहण करके आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति में छात्रों एवं छात्राओं के बीच कोई भी सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति का नकारात्मक संबंध (-0.10) है जो कि सांख्यिकी रूप से महत्त्वपूर्ण नहीं है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

टोपला, अ . (2014). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च ने वयस्क छात्रों का शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन को सामाजिक रूप से एकीकृत और व्यक्तिगत रूप से सुसंगत प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो अधिगम शिक्षण एवं संतुष्टि शिक्षण को अपने बहुआयामी संरचना में जोड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक पहलुओं का प्रभाव विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के द्वारा उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। यह अध्ययन (यू°के°) ब्रावो विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और सामाजिक इत्यादि पहलुओं का प्रभाव उनके शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में 25 से 57 वर्ष वाले 80 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया जिसमें वयस्क छात्रों में सीखने से संबंधित विभिन्न पहलुओं को जानने के लिए स्वयं निर्मित मापनी का निर्माण किया गया। उसमें 19 प्रश्नों का समावेश है और आकड़ों को एकत्रित करके आकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि वयस्क छात्रों का शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति में कोई भी अंतर नहीं पाया गया है।

श्रीवास्तव, एस. (2015). सामाजिक विज्ञान और मानव संसाधन के अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल ने उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में इंदौर शहर के उत्तर माध्यमिक विद्यालयों के ग्यारहवीं एवं बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों से 400 छात्रों एवं छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है और डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी एवं डॉ. हसीन ताज द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का संग्रहण करने के बाद आंकड़ों को सांख्यिकी विधियों के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शासकीय और गैर शासकीय विद्यालयों के समस्त छात्रों एवं छात्राओं का पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सिंह, जी. और चौधरी, के. एन. (2015). इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च ने एम. एड. के विद्यार्थियों का अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन पंजाब राज्य के मोगा जिले के पंजाब विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर आधारित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिस्पर्धा ज्यादा होने लगी है इसलिए शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को भी बहुत जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिस कारण विद्यार्थियों में शिक्षा और अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति भी प्रभावित होने लगी है। शिक्षा में गुणवत्ता एवं कौशलता के स्तर को बढ़ाने के लिए अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा की समस्याओं को सही तरीके से निर्वारण करने के लिए छात्रों को उचित प्रशिक्षण मुहैया कराना चाहिए ताकि छात्रों में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित हो सके। इस अध्ययन में मोगा जिले के पंजाब विश्वविद्यालय के शैक्षिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत एम.एड. के 80 छात्रों एवं 80 छात्राओं, कुल 160 विद्यार्थियों का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया आंकड़ों के संग्रहण के लिए स्वयं निर्मित अभिवृत्ति मापनी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

का निर्माण किया गया और आकड़ों का संग्रहण किया गया। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकी विधियों टी-मान, मानक विचलन आदि का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं का अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं है। शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं का अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं का अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति में कोई भी अंतर नहीं पाया गया है।

शर्मा, च. (2016). आयुशी इंटरनेशनल बहुविषयक अनुसंधान जर्नल ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के मंदसौर जनपद के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि के द्वारा प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में स्वयं निर्मित अनुसूची का निर्माण किया गया जिसमें कुल 19 कथनों का समावेश किया गया। अनुसूची में अध्यापक तथा विद्यालय की परिस्थितियों, सामाजिक परिस्थितियों व विद्यार्थियों की उच्च उपलब्धि से संबंधित कथनों का समावेश था। जिसकी प्रतिक्रिया या उत्तर विद्यार्थियों को सहमत/असहमत/अनिश्चित/ में देना था। स्वयं निर्मित अनुसूची के द्वारा आंकड़ों का संग्रहण और विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि विद्यार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

तिवारी, एम. एवं बरोदिया, पी. एवं सिंह, एन. और चौधरी, अ. (2016). बहुविषयक अनुसंधान वर्ल्ड वाइड जर्नल ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। विज्ञान विषय का हमारी राष्ट्र की प्रगति में अहम योगदान है। आज के आधुनिक युग में मनुष्य का जीवन विज्ञान के द्वारा ही उन्नति की ओर अग्रषित हो रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में ग्वालियर जनपद के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन के लिए माध्यमिक स्तर के 60 विद्यार्थियों 30 छात्र व 30 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। यह विद्यार्थी ग्वालियर जनपद के विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंध रखते है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के संग्रहण के लिए स्वयं निर्मित मापनी का निर्माण करने के साथ ही उसका प्रयोग चयनित विद्यालयों के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों पर किया गया। आंकड़ों का संकलन करके एवं आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, टी-मान सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक रही है। कुछ क्षेत्रों में ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों का शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक रही है। अंतिम शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक रही है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चौधरी, बी. (2017). सामाजिक विज्ञान और मानविकी का अंतरराष्ट्रीय जर्नल ने माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के गाजियाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के यू.पी. बोर्ड के छात्रों एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। प्रतिदर्श को चयनित करने के लिए गाजियाबाद जनपद के यू.पी.बोर्ड द्वारा संचालित बालक व बालिकाओं विद्यालयों की अलग-अलग सूची प्राप्त की गई। उसके पश्चात् बालक व बालिकाओं के विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया। इसमें 4 विद्यालयों का चुनाव किया गया। जिसमें 80 छात्रों और 80 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ.ताहिरा खातून व मोनिका शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया। आंकड़ों का संग्रहण करके आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी-मान तथा सार्थकता स्तर सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि यू.पी.बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गुप्ता, सी. (2017). शैक्षिक अनुसंधान और एशिया का प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखंड राज्य के देहरादून जनपद के एक महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों पर किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति के स्वरूप को जानने का प्रयास किया गया है क्योंकि विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृत्ति राष्ट्र तथा समाज के विकास के लिए बहुत उपयोगी होती है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए 08 महाविद्यालयों 200 छात्रों और 200 छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति अध्ययन के लिए आर.एस.सिंह, ए.एन. त्रिपाठी तथा रामजी लाल द्वारा विकसित 'द मार्डनाइजेशन स्केल' का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छात्रों और छात्राओं के साथ-साथ विभिन्न वर्गों, शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र तथा संयुक्त और एकल परिवार की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी विधियों जैसे कि मध्यमान, मानक विचलन, टी- परीक्षण का उपयोग तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि छात्रों और छात्राओं का लिंग, वर्ग, क्षेत्र तथा परिवार के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। एकल तथा संयुक्त परिवार के छात्रों और छात्राओं की अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया है।

बाबल, जे. (2017). अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च ने सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कम्प्यूटर अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के उदयपुर जनपद में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में स्वंय निर्मित मापनी का निर्माण करके आंकड़ों को एकत्रित किया गया तथा सांख्यिकी विधियों के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कम्प्यूटर अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा, वि. और व्यास, एस. (2018). उन्नत और विकास अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका ने विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व चिंतन शैली व सृजनात्मकता का अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन जयपुर ज़िले के चाकसू व कोटखावदा तहसील के माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों पर किया गया है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उपयोग विद्यार्थी अलग-अलग दृष्टिकोणों से करते है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति तार्किक पक्षों पर आधरित होती है। विद्यार्थी क्या चिंतन करता है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति विद्यार्थियों की चिंतन शैली को प्रभावित करती है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की सृजनात्मकशीलता पर पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के 351 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में अविनाश ग्रेवाल द्वारा निर्मित विज्ञान अभिवृत्ति मापनी व डी. वेकटरामन द्वारा निर्मित चिंतन शैली मापनी व ए न्यू टेस्ट ऑफ क्रिएटीविटी रोमा पाल द्वारा निर्मित सृजनात्मकता मापनी का चयन तथा इसका प्रयोग किया गया। आंकड़ों के संग्रहण के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया और उसके पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सकारात्मक/नकारात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति में समानता है, जिससे यह समझा जा सकता है कि सकारात्मक/नकारात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखने वाले विद्यार्थियों पर विद्यालय व लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सकरात्मक/नकारात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखने वाले विद्यार्थियों की चिंतन शैली व उसके आयामों में कोई भी अंतर नहीं पाया गया है। माध्यमिक स्तर के सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व उसके आयामों पर जैसे कि तारतम्यता, लचीलापन व मौलिकता में अंतर पाया गया है। माध्यमिक स्तर के नकारात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखने वाले सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता व उसके आयाम तारतम्यता में समानता है, और सृजनशीलता, लचीलापन, व मौलिकता वाले आयामों में अंतर है।

सिंह, डी. और चिंतामणी, ए. (2019). सामाजिक एवं मानविकी अंतरराष्ट्रीय जर्नल ने स्नातक एवं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के प्रति प्रभाव का एवं लघु परिवार के प्रति जागरूकता का शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। भारत की जनसंख्या वृद्धि भी एक जटिल समस्या है। कुछ विसंगतियों के कारण भारत की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। उसको देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत की जनसंख्या चीन की जनसंख्या से भी अधिक हो जायेगी। जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। यदि वास्तव में किसी राष्ट्र को प्रगति करनी है तो सरकार को जनसंख्या वृद्धि के खिलाफ़ नियम एवं कानून बनाने चाहिए। तभी कोई राष्ट्र उन्नति की और प्रगति करेगा। अतः छात्रों एवं छात्राओं को जागरूक करना अति आवश्यक हो गया जैसे कि लघु परिवार के लिए या परिवार नियोजन के लिए और जनसंख्या और शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में परिवर्तन या जागरूकता लाना भी पूर्ण हो गया है। यह सब शिक्षा के द्वारा ही संभव हो सकता है। शिक्षा किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति में महत्त्वपूर्ण स्तंभ होता है क्योंकि स्नातक एवं परास्नातक स्तर के पश्चात् ही युवा वर्ग का एक बड़ा समूह वैवाहिक जीवन (युगल दंपति) में बंध जाते है, जिसका जनसंख्या वृद्धि में बड़ा योगदान है। प्रस्तुत अध्ययन में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रयागराज (इलाहाबाद) जनपद के पाँच महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक एवं परास्नातक स्तरीय 25 छात्रों एवं 250 छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि के रूप में किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति मापनी के लिए टी. एस. शोढ़ी एवं जी. डी. शर्मा द्वारा निर्मित "जनसंख्या शिक्षा एवं लघु परिवार के प्रति अभिवृत्ति मापनी सामान्यकृत प्रश्नावली" एवं लघु परिवार के प्रति जागरूकता के लिए एम. राजन निक्म द्वारा निर्मित "फैमिली प्लानिंग एवं बर्थ कन्ट्रोल" "अभिवृत्ति मापनी" का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का संग्रहण किया गया। उसके पश्चात् आंकड़ों का सांख्यिकी विधियों के द्वारा विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि छात्रों एवं छात्राओं का जनसंख्या वृद्धि एवं लघु परिवार के प्रति जागरूकता एवं जनसंख्या शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

उपसंहार

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अध्ययन करने के बाद स्पष्ट होता है कि अनेक विद्वानों और शोधकर्ताओं ने शिक्षा मनोविज्ञान में अभिवृत्ति विषय के अलग-अलग क्षेत्रों को दृष्टिगत रखते हुए शोध कार्य कियें है। संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों से संबंधित विभिन्न आयामों पर जैसे ओझा, एस.(2013) ने विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर अपना शोध कार्य किया है। श्रीवास्तव, के. ए. और लाल, बी.(2013) ने निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति पर अपना शोध अध्ययन किया है। टोपला, अ.(2014) ने वयस्क विद्यार्थियों का शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति विषय पर तुलनात्मक शोध अध्ययन किया है। दास, के. एस. एवं हलदर, के. यू.और मिश्रा, बी.(2014) ने माध्यमिक स्तर के अल्पसंख्यक समुदाय से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति पर अपना अनुसंधान कार्य किया है। इसके अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी अभिवृत्ति के अनेक विषयों को ध्यान में रखकर के अपने शोध कार्य किए हैं। शिक्षा मनोविज्ञान में अभिवृत्ति विषय को लेकर के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अध्ययन तो हुए है, परंतु वह किसी भी अंतिम निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए हैं। इसलिए वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों, और सहायक सामग्रियों की मदद से विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन को पूर्ण किया गया है।

निष्कर्ष

शिक्षक एवं विद्यार्थी किसी भी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग होते है, क्योंकि समाज में शिक्षक के उत्तरदायित्व को अति महत्त्वपूर्ण माना गया है। शिक्षक ही विद्यार्थियों में शिक्षा एवं ज्ञान के साथ-साथ उनमें नैतिक मूल्यों को विकसित करते हैं। विद्यार्थियों में सामाजिक, मानसिक एवं नैतिक विकास होता है वह शिक्षा के माध्यम से होता है। यह सब ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य कर पाता है। ज्ञान विद्यार्थियों के सामाजिक चेतन स्तर के लिए महत्त्वपूर्ण होता है और सर्वांगीण विकास मे भी विशेष भूमिका को अदा करता है। यह सब कुछ शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो पाता है। अकेले ज्ञान ही शिक्षा में महत्त्वपूर्ण नहीं होता है। इसमे सफलता के लिए अभिवृत्ति भी अहम भूमिका निभाती है। शिक्षक और विद्यार्थियों का रिश्ता एक फूल और माली जैसा होता है जिसमें शिक्षक एक बगीचे को अपने ज्ञान के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

द्वारा सींचता है और विद्यार्थियों को एक आकर्षक फूल बनाता है। शिक्षक पर समाज की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। शिक्षक ही विद्यार्थियों को राष्ट्र का एक आदर्श नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाते है। अतः शिक्षा ज्ञान अर्जित करने का माध्यम है तो अभिवृत्ति सफलता की कुंजी है।

उपरोक्त संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान विषय के क्षेत्र में विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन से संबंधित शोध कार्य तो हुए है। लेकिन अध्ययन एवं ज्ञान के दृष्टिकोण से वह पर्याप्त नही है। वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा के क्षेत्र में नवीन ज्ञान का सृजन किया जा सके। ताकि समाज के सर्वांगीण विकास में प्रस्तुत शोध प्रपत्र अपनी महत्तवपूर्ण भूमिका निभा सके।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आलपोर्ट, जी. डब्लू. (1935). हैन्ड्बुक ऑफ सोशल साइकोलॉजी. वारसेस्टर : क्लार्क यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं.173-210.

कुप्पुस्वामी, बी. (1975). सामाजिक मनोविज्ञान के मूल तत्व. नई दिल्ली: विकास प्रकाशन , 7, पृ.सं.109-110

श्रीवास्तव, आर. और आलम, के. ए. (1998). आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 1, पृ.सं. 397-399.

बैरन, आर. ए. तथा बायर्न, डी. (2004). समाज मनोविज्ञान. ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी, 11, पृ.सं. 31-36, 209-236.

ओझा, एस. (2013). सी.बी.एस. ई. बोर्ड के छात्रों एवं छात्राओं के मूल्यों एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, ANVESHANAM - शिक्षा का एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, 1(1), पृ.सं. 50-53.

दास, के. एस. एवं हलदर, के. यू. और मिश्रा, बी. (2014). माध्यमिक स्तर के अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की शिक्षा और अकादमिक उपलब्धि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन. एप्लाइड रिसर्च आफ इंटरनेशनल जर्नल, 4(10), पृ.सं. 1-6.

टोपला, अ. (2014). वयस्क छात्रों का शिक्षण अधिगम और शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च, 142(1), पृ.सं. 227-234.

क्रो एवं क्रो, और चौहान, एस. एस. (2015). आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान, हिंदी अनुवाद पुस्तक, पृ.सं. 16.

श्रीवास्तव, एस. (2015). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन. अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल, 3 (9), पृ.सं. 1-4.

सिंह, जी. और चौधरी, के. एन. (2015). एम. एड. के विद्यार्थियों का अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, 4(4), पृ.सं 4-6.

अग्रवाल, वी. (2016). मनोविज्ञान कक्षा 12. एस. बी.पी.डी.प्रकाशन, 2(1), पृ.सं.155-157.

सिंह, ए. के. (2016). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, पृ.सं. 712-713.

शर्मा, च. (2016). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, आयुशी इंटरनेशनल बहुविषयक अनुसंधान जर्नल, 4 (1), पृ.सं. 4-6.

तिवारी, एम. एवं बरोदिया, पी. एवं सिंह, एन और चौधरी, अ. (2016). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन , बहुविषयक अनुसंधान वर्ल्ड वाइड जर्नल, 2 (2), पृ.सं. 44-48.

वशिष्ठ, के. सी. (2016). शिक्षक अभिवृत्ति एवं अभिरुचि परीक्षण. उपकार प्रकाशन, 12(2), पृ.सं.व 124-126.

बाबल, जे. (2017). सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कंप्यूटर अभिवृत्ति का अध्ययन. अंतरराष्ट्रीय जर्नल आफ अनुप्रयुक्त रिसर्च, 4(6), पृ.सं. 58-61.

चौधरी, बी. (2017). माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का कंप्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान और मानविकी का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 2(1), पृ.सं. 33-38.

गुप्ता, सी. (2017). स्नातक स्तर पर अध्ययनत छात्रों का आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, शैक्षिक अनुसंधान और एशिया का प्रौद्योगिकी क्षेत्र, 3(5), पृ.सं. 355-357.

भटनागर, ए. (2018). मनोविज्ञान पुस्तक. दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन, पृ.सं.114-123.

शर्मा, वि. और व्यास, एस. (2018). विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व चिंतन शैली व सृजनात्मकता का अध्ययन, उन्नत और विकास अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 3(2), पृ.सं. 1431-1436.

सिंह, डी. और चिंतामणी, ए. (2019). स्नातक एवं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के प्रति प्रभाव का एवं लघु परिवार के प्रति जागरूकता का शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, सामाजिक एवं मानविकी का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 3(1), पृ.सं. 108-110.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies